श्रीमद्भगवद्गीता विषय प्रवेश

डॉ. वसुधा वि. देव,
शासकीय अध्यापक महाविद्यालय,
अकोला.

जब भी राष्ट्र के निर्माण कार्य का शुभारंभ होता है तो सर्वप्रथम वह बुध्दिमान व्यक्तिओं को मानसिक शांति एवं भौतिक कर्मठता से ही होता है। क्योंकि मानव की व्यक्तित्व विकास की आवश्यकताओं को सभी महान विचारकों ने स्वीकृत किया है। भगवद्गीता एक ऐसा ही शास्त्र है जिसके द्वारा मानव व्यक्तित्व का गठन और इसके द्वारा सभी चुनौतियों का सामना करने योग्य व्यक्ति को तयार करना यही उसका उद्देश्य है। राष्ट्र नागरिकों से बनता है। राष्ट्र का नागरिक अगर बलवान, त्यागी और कुशल होते है तो राष्ट्र बलवान होगा। व्यक्तिगत मुक्ति में ही राष्ट्रीय मुक्ति एवं उन्नति निहित है। गीता युवको को संबोधित करती है। क्योंकि अर्जुन के माध्यम से जो भी प्रदर्शित हुआ है वह है अशांति अनंत इच्छाएँ, अविश्वास, पतनकारी विषाद, विक्षोभजनक भ्रांतियॉ, यह अर्जुन रोग है। और कृष्ण थेरपी के माध्यम से इसका उपधार यही गीता का मुख्य उद्देश्य हैं। आज युवकों में बल, तेज, साहस, कुछ कर दिखालाने की आकांक्षा है। वह कर्म के कार्यक्षेत्र में अच्छे प्रयोग कर सकते है। परंतु उन्हें विशेष मानसिक संतुलन की आवश्यकता है। तथा व्यवहारिक बुध्दि की आवश्यकता है। भ्रामक परिस्थितियों में अगर युवक घिर जाता है तो उसे इन चुनौतियों का मूल्यांकन एवं योग्य निर्णय लेने का प्रशिक्षण अनिवार्य हो जाता है। यह चुनौतियॉ केवल बाहरी नहीं है परंतु उसका स्रोत मानव के हृदय में है। मानव की भीतरी अवस्था ही प्रकट अवस्था का कारण है। हमारे देश का आज का युवक सही मायने में आंतरिक पतन की अर्जुन स्थिति से गुजर रहा है। इस समय गीता ही राष्ट्र के युवकों के लिए महान शास्त्र हैं।

''गीता'' यह श्रीकृष्ण-अर्जुन संवाद है। इस संवाद के साथ हमें सुसंवादी बनना है। जिस व्यक्ति ने यह सुसंवाद को साधा है उसका जीवन कृतार्थ हैं। और जिसने यह अभ्यास का निर्णय लिया है वह अभिनंदन योग्य है। भगवद्गीता यह नित्य नूतन है। अखिल जीवन भी हम इसके अभ्यास में समर्पित करते है तो भी हम उसकी अखंडता की नित्यनुतनता को एवं चिरंतनता को पाऐंगे। यह शास्त्र है! और भगवान श्रीकृष्ण की कृपा से ही यह शास्त्र सरल होता है। यह भगवद्कृपा है इसलिए गीता में ''श्रीकृष्ण उवाच'' यह शब्द प्रयोग नहीं है। बल्कि ''भगवान उवाच'' यह शब्द प्रयोग किया गया है। यह अध्यात्म शास्त्र है। जीव कल्याण हेतु यह शास्त्र भगवान श्रीकृष्ण के माध्यम से उत्पन्न हुआ है। इसलिए इस शास्त्र का श्रोता ''नींव'' पूर्ण है और ''शिव'' इसका प्रवक्ता है। शिवतत्व के द्वारा जीव तत्व को यह ज्ञान प्रदान किया गया है। गुरू से शिष्य को, पिता से पुत्र को यह इस अध्यात्मशास्त्र की परंपरा है

इसलिए जब भी हम इसका अध्ययन करते है तो हम शिष्य की भूमिका में होते हैं। इसलिए प्रत्येक अध्ययनकर्ता स्वयं को सत्शिष्य समझे। क्योंकि अर्जुन ने सत्शिष्य होकर ही सद्गुरु के सामने समर्पित, शरणागत हुआ है। इसलिए गीता अभ्यास प्रारंभ करने के पूर्व हमें कुछ बातों को ध्यान में रखना है :- १. मैं शिष्य हूँ। २. मैं आद्यगुरु को वंदन करता हूँ। आद्य गुरु के प्रति शरणागति। ३. गुरु शिष्य संवाद यह गीता संप्रदाय है। ४. शिव यह गुरु है तथा जीव यह शिष्य है।

भारतीय युध्द समय अर्जुन को स्वकर्तव्य के समय मोहउत्पन्न होता है और इस मोह के निरसन हेतु स्वयं भगवान यह मोह निवृत्ति का शास्त्र विषद करते है। प्रत्येक व्यक्ति अगर स्वयं परिक्षण करके तत्पश्चात् अगर मोह महसूस करता है तो उसे निश्चित ही गीता अभ्यास ओर जाना होगा। महाभारत भीष्म पर्व में भगवान व्यास जी ने ग्रंथित किए इस भगवद्गीता में ७०० श्लोक है। गीता में प्रवेश करने के पूर्व यह ज्ञात होना आवश्यक है क्योंकि यह गीता प्रासाद का बाहय दर्शन है। इसका बाहय दर्शन निम्नलिखित है :

श्लोक : ७००

उवाच : ०४

भगवान उवाच : ५७५ श्लोक

अर्जुन उवाच : ८४ श्लोक

संजय उवाच : ४० श्लोक

धृतराष्ट्र उवाच : ०१ श्लोक

गीता शास्त्र यह निर्मोही होने का शास्त्र हैं। भगवद्स्वरुप के आकलन से ही यह संभव है। इसके लिए गीता में १८ उपायो का अवलंब किया है। १८ उपाय यह भगवद् प्राप्ति के लिए है। यह उपाय को भगवद्गीता में ''योग'' कहा गया है। जीव ब्रहम ऐक्य प्राप्ति यह मोह निवृत्ति का मार्ग है। इसलिए जीव ब्रहम ऐक्य की प्राप्ति यही गीता का मुख्य प्रयोजन है। विषय का अधिकारी जीव है। वास्तविक रुप में जीव ब्रहम ऐक्य यह सिध्द है परंतु जीव इससे अनभिज्ञ है। और यह भ्रमित अवस्था है। यही भ्रमित अवस्था अर्जुन की है। इसलिए स्वयं भगवान ही गीता के प्रवक्ता है और अर्जुन का भ्रमपटल करते है। इस बैठक को सर्वप्रथम गीताध्यास के पहले मजबुत करना अनिवार्य है। अर्जुन मोहित हो चुका है और इसलिए अपने स्वधर्म को त्याग रहा है। अभिमान की उत्पत्ति अहंकार से होती है। यह अहंकार 'अहं' और 'ममं' विषय में होता है। अहं अभिमान से मोह उत्पन्न होता है। तथा ममं अभिमान की परिणिति शोक है। अर्जुन ममं अभिमान के कारण शोकान्वित है। इसलिए ''ममं अभिमान'' का त्याग ही शोक निवारण का मार्ग हो सकता है। यह अभिमान ममं अभिमान इससे अविवेक उत्पन्न होता है। इसलिए यह अभिमान के त्याग में ही आनंद की अनुभूति है। जब भी आनंदमय अवस्था इस अहंकार से आवृत्त होती है तो शोक उत्पन्न होता है। इस शोक से मानव अपनी निर्णायक शक्ति खो बैठता है। और स्वधर्म का त्याग करता है। परधर्म को स्वीकृत करता है। आज स्वधर्म के त्याग के कारण ही भारत की दुर्दशा हुई है। भारतीयत्व को ही हम त्याग चुके है। आज मानव अपना स्वधर्म खो चुका है। विद्यार्थी, अध्यापक, गृहस्थी, माता, पिता, हर धर्म का त्याग मानव कर रहा है। इससे अगर हम करना चाहते है तो

आत्मज्ञान से ही मोह निवृत्ति होगी आत्मज्ञान के लिए योग्यता, पात्रता अनिवार्य है। और पात्रता के लिए योग्य कर्म का अनुसरण अनिवार्य है। इसलिए गीता शास्त्र की निर्मिती है। कर्म उपासना, योग ज्ञान युक्त गीता है। भगवद्गीता ज्ञान पर एवं मोक्ष पर है।

शास्त्र का कुछ प्रयोजन होता है। गीता प्रयोजन है परमनिश्रेयस की प्राप्ति। अध्यात्म यह प्रपंच विनाशी है। इसका आकलन तथा अनुभूति ही सही मायने में मोक्ष है। इस मोक्ष को प्राप्त करना यही गीताभ्यास का परम प्रयोजन है। इस परम प्रयोजन को प्राप्त होने से पहले अर्थात दुय्यम प्रयोजन भी है। और यह प्रयोजन है ''मोक्ष प्राप्ति की योग्यताओं को प्राप्त करना'' यह योग्यता है ज्ञाननिष्ठा की। परम प्रयोजन को प्राप्त करने का साधन क्या है ? इन साधनों का क्रम क्या होना चाहिए ? अर्थात कर्म सन्यास के माध्यम से आत्मस्वरुप में स्थित होना ही यह साधन है। कर्मयोग, निष्काम कर्म, अकतृत्वभाव से ही ज्ञाननिष्ठा की योग्यता को प्राप्त किया जा सकता है? कर्मयोग, उपासना तथा अष्टांगयोग से ज्ञाननिष्ठा की योग्यता प्राप्त होगी। इस संदर्भ में पिता को त्रिकांडात्मक कहा गया है। यथा अधिकार तथा साधन यह गीता की विशेषता है। सत्वगुण प्रधान व्यक्ति ज्ञानयोग का अधिकारी है! प्रधानत: रजोगुण व निम्न तमोगुणी यह कर्मयोग का अधिकारी है। सत्वगुणी रजोगुणी यह भक्ति योग का अधिकारी है। ज्ञाननिष्ठा की योग्यता को प्राप्त करना याने ज्ञान की तत्व में मानसिक रुप से स्थित होना ब्रहमचिंतन में रहना यही ज्ञाननिष्ठा है। निष्ठा के सोपान है १. ज्ञान का वाणी से शब्द से आकलन २. शब्द के अर्थ को प्राप्त होता है। ३. जीव ब्रह्मैक्य, ब्रह्मसत्व, जगन्मीथ्या ज्ञान विषयों को अर्थरुपता प्राप्त होना। ४. चिंतन, अभ्यास, गुरुसेवा ध्यान इस माध्यम से शब्द का आकलन होना। ५. शब्द आकलन के पश्चात् यह सत्व है इस श्रध्दा को दृढ करना। ६. श्रध्दा में दृढ रहना इस अवस्था में अवस्थित रहना और उसके अनुभूती के माध्यम से श्रध्दा को मजबूत करनां इस प्रकार सत्य की अनुभूति से श्रध्दा उत्पन्न होगी और 'श्रध्दा' यह निष्ठा की पूर्व अवस्था है। बुध्दि के जिस वृत्ति में सत्य की धारणा मजबूत होती है उसे श्रध्दा कहते है। इस श्रध्दा में मानव अखंड रहता है तो असे निष्ठा कहते है। जीव ब्रह्मैक्य, ब्रह्मसत्वं, जगन्मीथ्या यह ज्ञान विषय है। ज्ञान निष्ठा को प्राप्त करने के लिए साधन अनिवार्य है। इस निष्ठा को प्राप्त करना यही गिताभ्यास में प्रवेश करने की योग्यता है। वेद वाङ्मय में ''श्रध्दा'' का अर्थ बताया गया है। ''श्रत'' इस शब्द और ''धा'' इस धातु लगने से ''श्रध्दा'' इस शब्द की निर्मिती होती है। सत्य विद्यमान है इस बुध्दि को मजबूत करना ही श्रध्दा है। अंत:करण की इस वृत्ति को श्रध्दा कहते है। सत्य वस्तु को अंतिम सत्य मानकर उसके अस्तित्व के संबंध में मजबूत विश्वास रखकर उस सद्वस्तु के अस्तित्व के लिए मन में आशंका भी जब उत्पन्न नहीं होती है तभी उसे श्रध्दा कहते है। इस सततत्व के चिंतन में मानव अखंड रहता है उसे निष्ठा कहते है।

महर्षी व्यास जी ने कुरुक्षेत्र को प्रतीकात्मक रुप दिया है। यह मानव हृदय की प्रतीक है। इस हृदय कौरवों जैसी अशुभ प्रवृत्तियॉ और पांडवों जैसी शुभ प्रवृत्तियॉ सदैव युध्द करती है। कर्म करते समय जब भी निर्णायक क्षण आता है तो मानव हृदय से युध्द प्रारंभ होता है। और दुस्प्रवृत्तियॉ शक्तिशाली होने से आंतरिक दिव्य सेना सदैव दुर्बल

दिखायी देती है। मानसिक विखण्डन की प्रक्रिया प्रारंभ होती है। मानव अपने आत्मविश्वास को खो बैठता है। घोर विषाद और निराशा के कारण उन्मादी मन का विस्फोट होता है। और मानव समस्या से पलायन करता है। यह मानव व्यक्तित्व का भयानक विनाश है। यह मानसिक संकोच तथा कायरता के कारण व्यक्ति सफलता से वंचित होता है। उसके मन की दरार और चौडी होती है। और शीघ्र ही अस्तव्यस्त व्यक्तित्व उभर उठता है। और व्यक्ति किंकर्तव्यविमुढ होता है। उसकी बुध्दि कर्म में मार्गदर्शन नहीं करती। मन के इस घातक रोग का उपचार संपूर्ण गीता विषय है। मानसिक विषाद के इस क्षणों में मानव अपने मस्तिष्क में युक्तियॉ गाठ लेता है। यह कायरता है। परंतु हम अपने कर्मों को उचित सिध्द करता है। अपने आंतरिक विषाद को सही प्रदर्शित करने के लिए कमजोर बहाना का आश्रय लेता है। गीता का यह व्यक्तित्व के पूननिम्रण संबंधी विज्ञान है। प्रत्येक व्यक्ति को जब भी अपने जीवन में इस तरह परिस्थिति का सामना करना पडे तब भी गीता तत्वज्ञान मार्गदर्शक होता है।

हमारे देश का युवक आज इसी मनोवैज्ञानिक रुप में आंतरिक पतन से गुजर रहा है। युवक की ''अर्जुन स्थिति'' हुई है। अर्जुन अगर युध्द स्थल पर अकेला होता तो शायद अपने कर्तव्य स्थल से भाग गया होता। उसकी इस कृति से दुष्प्रवृत्तियॉ सद्प्रवृत्तियों को खत्म कर देती थी। मगर इस अवस्था से उभार कर अपने लक्ष्य को स्पष्ट अनुभव कराने के लिए भगवान श्रीकृष्ण उपलब्ध हो। अर्थात मानसिक विषाद के कारण चुनौतियों का सामना करने के लिए असमर्थसा अर्जुन यह विद्यार्थी के अस्तव्यस्त व्यक्तित्व का उपचार करके उसके व्यक्तित्व को पुनर्संघटीत कर रहे है। शिक्षा की दृष्टि से यह मानसिक पुनर्संघटन की प्रक्रिया ही गीता का मुख्य विषय है। मानव निर्माण के विज्ञान को सामान्य जनों तक गीता ही पहुॅचाता है। गीता यह जीवन शोध की योजना है। जीवन के साथ इसका घनिष्ठ संबंध है। हम किसी भी भूमिका में जब भी इस जगत से संबंध प्रस्थापित करते है तो गीता इस कला का ज्ञान हमें प्रदान करती ळै। गीता यह व्यवहार और पुरुषार्थ की कला हमें प्रदान करती है।

आज की स्थिति में ''अर्जुन रोग'' वैश्विक हो चुका है। इस अर्जुन रोग का उपचार ''कृष्ण रसायन'' ही है! स्वामी चिन्मयानंद कहते है, ''यह एक विश्वव्यापी रोग है केवल व्यक्तिही नहीं किंतु जातियॉ राष्ट्र भी नपुंसकता की इस अर्जुन - मन:स्थिति और अत्यंत निराशा से उत्पन्न जबरदस्त घबराहट की अवस्था का शिकार हो सकते है। अर्जुन का उपचार ''कृष्ण रसायन'' ही है। अंतिम अध्याय में हम देखते है कि पीड़ित रोगी अर्जुन स्वयं अपने से ही प्राप्त उत्साहपूर्ण गतिशीलता के कारण अनुभव करता और कह उठता है कि उसका मोह नष्ट हो गया है। वीर अर्जुन भ्रांति के काले बादलों में से बाहर निकल आता है और अपने कर्मक्षेत्र पर देदिप्यमान होने लगता है और शीघ्र ही वह पूर्ण विजय महान सफलता प्राप्त करता है। हम क्यो न देखने का प्रयत्न करे की क्या इस उपचार द्वारा आज कल के युवा जगत की सहायता संभव है ? गीताभ्यास में प्रवेश करने पूर्व कुछ सवालों का जबाब अनिवार्य है। उसके जबाब से ही गीता अभ्यास में प्रवेश करना उचित है वह सवाल निम्नलिखित है :

१) गीता अभ्यास का अनुबंध चतुष्टय क्या है ?

जवाब : १. अधिकारी - साधन चतुष्टय संपन्न साधक

२. विषय – जीवब्रह्मेक्यज्ञान

३. प्रयोजन – मोहनिवृत्ती

४. संबंध – प्रतिपाद्य–प्रतिपादक सहसंबंध

२) भगवद्गीता में कौनसे प्रधान मार्ग बताए है ?

१. कर्मयोग २. ज्ञानमार्ग

प. पू. स्वामी चिन्मयानंद जी ने गीताभ्यास को मानव निर्माण की कला में प्रस्तुत किया है।''मानव निर्माण की कला'' यह उनके प्रवचनोंपर आधारित पुस्तक में गीता के १०६ अनिवार्य विषयोंपर प्रकाश डाला है।